आरोग्यम् सुख सम्पदा

अंक - 10 वर्ष 2023 (अप्रैल-सितंबर)

स्पंदन

अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, रायपुर

(केन्द्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार के अधीन स्वायत्त संस्थान)

ALL INDIA INSTITUTE OF MEDICAL SCIENCES, RAIPUR

(An Autonomous Institution under the Ministry of Health and Family Welfare, Govt. of India)

अनुक्रमणिका

क्रमांक	शीर्षक	पृष्ठ
1.	निदेशक की कलम से	1
2.	हिंदी से बातें	3
3.	पलायन	4
4.	जलता मणिपुर	6
5.	जीती जिंदगी	8
6.	रस-भस्म	10
7.	समय है निकल जाएगा	12
8.	धर्मयुद्ध	13
9.	ना नहीं बोल पाया	15
10.	अस्पताल का दृश्य	17
11.	दवाई, दोस्त या दुश्मन	19
12.	चुप्पी साधे चहारदीवारी	20
13.	अभिमान हिंदुस्तान	22
14.	जीने से बढ़कर कुछ नहीं	23
15.	जिंदगी का सफर	25
16.	विश्वास	26
17.	पूछ रहा तिरंगा कब तक	27
18.	स्त्री	29
19.	धार्मिक सियासत	31
20.	प्रतियोगिता परिणाम	33

आरोग्यम् सुख सम्पदा

निदेशक की कलम से

निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल
बिन निज भाषा-ज्ञान के, मिटत न हिय को सूल

-भारतेंदु हरिश्चंद्र

मुझे अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, रायपुर के राजभाषा प्रकोष्ठ की अलंकृत हिंदी ई-पत्रिका 'स्पंदन' के नवीन संस्करण (दशम् अंक) को संस्थान के सभी छात्रों, चिकित्सकों, अधिकारियों एवं कर्मचारियों के बीच ऊर्जामय वातावरण में प्रस्तुत करते हुए अत्यंत प्रसन्नता महसूस हो रही है। हिंदी के प्रसिद्ध कवि भारतेंदु हरिश्चंद्र ने साहित्य, गद्य, नाटक और पत्रकारिता के माध्यम से हिंदी भाषा को समुन्नत बनाने में अविस्मरणीय योगदान दिया है। आज हिंदी भाषा जो चरमोत्कर्ष को प्राप्त कर रही है, उसकी नींव कही जाने वाली भाषा खड़ी बोली के आरंभ का श्रेय भी भारतेंदु हरिश्चंद्र को जाता है जिसके कारण हिंदी भाषा निरंतर रूप से गतिमान है। हिंदी की इस लोकप्रियता को चहुंओर स्पंदित करने में एम्स, रायपुर भी प्रतिबद्ध है। इसी क्रम में हमारे संस्थान के राजभाषा प्रकोष्ठ की 'स्पंदन' पत्रिका का नवीन संस्करण (दशम् अंक) सुलभ रूप से ऑनलाइन, एंड्रॉयड, ई-मेल और एम्स, रायपुर की वेबसाइट के माध्यम से पाठकों के बीच उपलब्ध है।

हिंदी आत्मीय भाषा है और हमारे बीच संवाद की सबसे व्यापक एवं व्यावहारिक भाषा है। इस पत्रिका का उद्देश्य हिंदी भाषा को न सिर्फ सवंर्धित और समृद्ध करना है बल्कि हमारे संस्थान में चिकित्सा के क्षेत्र में रोगियों के साथ व्यापक संवाद स्थापित कर अधिक से अधिक लाभ पहुंचाना

भी है। रोगियों की समस्याओं का संतोषप्रद निराकरण तभी संभव है जब हम उनसे उनकी समस्याओं के बारे में हिंदी/क्षेत्रीय भाषा में जानकारी लेंगे। अतः हमारे लक्ष्य की पूर्ति के लिए भी यह 'स्पंदन' पत्रिका हिंदी भाषा को समझने एवं अभिव्यक्ति के मंच के रूप में प्रेरक सिद्ध होगी। यह पत्रिका संस्थान में कार्यरत चिकित्सक, अधिकारी, कर्मचारी और छात्रों को उनकी कलात्मकता को जीवंत रखने में मील का पत्थर साबित होगी।

इसी क्रम में हिंदी भाषा की समृद्धि की ओर अग्रसर और हम भारतीयों के प्रेम एवं स्नेह की प्रतिमूर्ति राजभाषा प्रकोष्ठ, एम्स, रायपुर की छमाही ई-पत्रिका 'स्पंदन' का दशम् अंक आप सभी के समक्ष प्रस्तुत कर रहा हूं। इस अंक के अवलोकन में आप पाएंगे की संस्थान के ओजस्वी लेखकों ने हिंदी भाषा के माहात्मय, नारी सशक्तिकरण, वृक्षों से लगाव, देशभक्ति, दवा एवं अस्पताल की महत्ता एवं जानकारी समेत वीर रस के काव्य से सुसज्जित कर अधिक रोचक एवं बोधगम्य बनाया है। इन काव्यों की रोचकता तथा रचनात्मकता हिंदी साहित्य को निश्चित रूप से पल्लवित एवं पुष्पित करेगी और आपके मन को अनूठे अहसासों से भर देगी। मुझे पूरी उम्मीद है कि 'स्पंदन' पत्रिका का यह अंक आप सभी के मन को निश्चित रूप से अहलादित करेगा एवं जीवन को तरंगित करेगा। साथ ही यह पत्रिका हमारे संस्थान एम्स, रायपुर में राजभाषा हिंदी के अधिक से अधिक कार्यालयीन प्रयोग का मार्ग प्रशस्त करेगा।

शुभकामनाओं के साथ

आपका शुभाकांक्षी
प्रो. (डॉ.) अजय सिंह
निदेशक एवं सीईओ, एम्स, रायपुर
अध्यक्ष, राजभाषा कार्यान्वयन समिति

हिंदी से बातें

कैसे बताऊं तुझे ए हिंदी, कि तू कितनी प्यारी - प्यारी है

सुंदर सुगम सुसज्जित है तू, तुझमें कुछ बात निराली है।

तू क्यों रोती ए हिंदी कि तू कितनी भुलाई जा रही,

तू उस पेड़ की जड़ है हिंदी,

जिसमें अन्य भाषाएं फलती- फूलती जा रही।

नहीं मिटा सकता कोई तुझको, तू मिटने वाली चीज नहीं

कैसे करें बड़ों का आदर, पराई भाषा में इतनी तमीज नहीं।

तेरा स्वर व्यंजन से परिवार बना है, व्याकरण तेरी छाई है ।

हिंदी का दीवाना हूं मैं, मेरे रग-रग में हिंदी समाई है।

हिंदी की महिमा समझ सके , इतनी हममें अभी समझ नहीं

पर मां को भूल, सौतेली मां को चाहें इतने भी हम ना समझ नहीं।

अंत में जो बोलूंगा मैं वो लग सकती है थोड़ी खरी - खरी ।

अगर सीख भी पाया विदेशी भाषा, हिंदी हृदय में रहेगी सर्वोपरि।

-गोपाल शर्मा

कनिष्ठ प्रशासनिक सहायक

अस्पताल लेखा, एम्स रायपुर

(हिन्दी पखवाड़ा -2023 के अंतर्गत स्वरचित काव्य-पाठ प्रतियोगिता के अधिकारी/कर्मचारी/संकाय सदस्य वर्ग में प्रथम पुरस्कार प्राप्त कविता)

पलायन

एक चांद ही उसका हमसाया

बशर्ते साय जो चलता है

अब शाम नहीं होती है, और

दिन अनचाहे ही ढ़लता है।

कुछ पिंजरे तोड़े थे उसने

स्ययादों से बच निकला

दाना चुगने के लालच में

पेड़ से था एक दिन फिसला

अब बस अपने घर जाने को

वो मीलों पैदल चलता है।

अब शाम नहीं होती है और

दिन अनचाहे ढ़लता है।

जिम्मेदारी की गठरी है,

और भूखे पेटों की पेटी।

अन्नपूर्णा नाम था जिसका
बिलख रही वो बेटी
जिसने सबको था पाला
वो खुद टुकड़ों पर पलता है।
अब शाम नहीं होती है और
दिन अनचाहे ढ़लता है।
इस देश में है सरहद कितने
हर सरहद ने दुतकारा है
कीट पतंगों सा उसको
हर ज्योत ने ही उसको फटकारा है।
अब रोशन करने को जीवन
खून रगों में जलता है।
अब शाम नहीं होती है और
दिन अनचाहे ढ़लता है।

- डॉ. शिवशंकर मिश्रा
वरिष्ठ रेजिडेंट
विकिरण चिकित्सा

(हिन्दी पखवाड़ा -2023 के अंतर्गत स्वरचित काव्य-पाठ प्रतियोगिता के अधिकारी/कर्मचारी/संकाय सदस्य वर्ग में द्वितीय पुरस्कार प्राप्त कविता)

जलता मणिपुर

हे मातृ शक्ति भारत की नारी
तुम देश पर एक उपकार करो
नहीं जन सकती अगर राम-कृष्ण
तो दुश्शासन भी न पैदा करो
धृतराष्ट्र तो अंधे थे,
और सौ-सौ पुत्र किए पैदा
गांधारी ने पट्टी बांध लिए
कौरव कुल को ना तार सके.
जिस सभा में मौन पितामह हो
उस सभा का तुम तिरस्कार करो
नहीं जन सकती अगर राम-कृष्ण
तो दुश्शासन भी न पैदा करो
वो द्रौपदी आज भी जिंदा है
क्यो मौन है सारे गुरु संत
वे चीख-चीख कर पूछ रही
क्या इसका नाम है प्रजातंत्र
बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ
ये खोखले नारें रहने दो
नहीं जन सकती अगर राम कृष्ण
तो दुश्शासन भी न पैदा करो
नारी तो देव पूजनीय है,

पर अब आंचल में दूध और आँखों में पानी है।
और इनका न अपमान करो
जिस कोख से ऐसे पुरुषों ने जन्म लिया
उस कोख को बांझ अब होने दो
नहीं जन सकती अगर राम-कृष्ण
तो दुश्शासन भी न पैदा करो
वो आसमान में उड़ने वालों
एक नजर जमीन पर भी डालो
तुम क्षणिक धरा न जीत सके
क्या चाँद पर दाग लगाओगे
नहीं जन सकती अगर राम-कृष्ण
तो दुशासन भी न पैदा करो
नारी की पहचान है शक्ति
विश्व में विश्वंश है शक्ति
अब इनका स्मरण करें
नहीं जन सकती अगर राम-कृष्ण
तो दुश्शासन भी न पैदा करो

-शिखा श्रीवास्तव
कनिष्ठ प्रशासनिक सहायक
प्रशासनिक कार्यालय

(हिन्दी पखवाड़ा -2023 के अंतर्गत स्वरचित काव्य-पाठ प्रतियोगिता के अधिकारी/कर्मचारी/संकाय सदस्य वर्ग में तृतीय पुरस्कार प्राप्त कविता)

जीती जिंदगी

एक पेड़ था हारा हुआ

सूख चुका था उसका तना

टहनियों पर छाया था असीम विराना

फूट-फूटकर रोता रहा, कराहता रहा

कि अब वह कभी ना दिख सकेगा हरा

कभी भी ना चिड़ियों के चहचहाट से रह पाएगा भरा

उन मासूम आंसुओं में प्राण की थी चाह

एक नन्हा सा पौधा उस पेड़ के तल से उत्पन्न हुआ था

जैसे उस पेड़ की इच्छाओं को पूरा

करने उसके पैरों को छुआ था

धीरे-धीरे वो पौधा बड़ा हुआ

अठखेलियां करते हुए उस पेड़ का

जैसे उसने प्रदक्षिणा की

एक दिन जब उस सूखे पेड़ ने आंखें खोली,

उसकी आंखें थी आंसुओं से गीली

उस पौधे पर सुंदर गुलाबी फूल थे खिले

उन्हें देखकर मिट गए सारे शिकवे गिले

एक मधुर सी आवाज उसके कर्ण पर पड़ी

फूला ना समाया वह पेड़ देख चिड़ियों की लड़ी

शोभित था वह गर्वित था वह जीवन से भरपूर था वह

वह पेड़ जो कभी हारा हुआ था

वह पेड़ जो कभी सूखा हुआ था।

जीती जिंदगी यानी जीत गई जिंदगी

मायूसी की हार से

और जीती जिंदगी यानी जीती रही जिंदगी

मुश्किल हालात में

इसलिए कहते हैं

आज काली रात है तो क्या हुआ कल

सवेरा जरूर आएगा,

हिम्मत रख, मन सच्चा रख, कर्म अच्छा रख

अच्छा कल जरूर आएगा।

अच्छा फल जरूर पाएगा।

- डॉ .अरुणिता टी जगजापे
सहायक प्राध्यापक

(हिन्दी पखवाड़ा -2023 के अंतर्गत स्वरचित काव्य-पाठ प्रतियोगिता के अधिकारी/कर्मचारी/संकाय सदस्य वर्ग में सांत्वना पुरस्कार प्राप्त कविता)

रस-भस्म

प्रखर सुखी मनमोही थी

वीरांगना वो ऐसी थी

परिभाषा वीरता की थी

न देवी न वो रानी थी

अज्ञात हताशा सी थी

ये दुनिया उसका अस्तित्व मानी थी

था निर्मल उसका मन

था शांत उसका जीवन

तूफान लाखों आए

विचलित कदाचित न कर पाए थे

अरे ये कौन आया, कौन आया जिसे देख

श्वास स्थायी हो गई नजरें ठहर सी गई

तथापि हृदय की गति , अति तीव्र हो गई

सहसा उसने अपने भाव जो व्यक्त किए

कि मेरी जिंदगी मेरी ऑखों के आगे

मेरा स्नेह मेरी राहें ताके

सतरंग नवरस सप्तक वो मेरा

मनोहरी अद्भुत समस्त वो मेरा

फिर अचानक एक

छूटे जो अभ्र भ्रम छिन्न भिन्न

तो छूटे जो..... न था उसके भाग्य में

ज्यों सतरंग भस्म हो गए तो क्या
श्रृंगार भाग्य में
बरस रही थी वो घटा देखा या मैनें झांक के रिक्त काया बैठी थी
उसके हृदय की राख पे
अश्रुओं की अग्नि में वो ऐसे भस्म
हो गई कांपती थी हर समय
वो ऐसे छम हो गई
अब पहली बार ऐसा सदमा
खाकर उसने खुदा से
फरियाद की कि
उससे खता क्या हो गई
न कदर उसके भाव की
बिन मांगे दुआएं कबूल
गैरों की पर इबादत
तलक यहां औकात फकीरों की
फिर धीरे-धीरे तिनके-तिनके उसने
समेटा है अब खुद को फिर
फिर टूटने का डर भी है
दुनिया है पुरानी वाली
पर नजर नवीन कठोर है
और उसे सौगंध है अपने अस्तिव की अब
न भस्म अभी से हो
बहे न अश्रु धारा में
विचलित जिसे न कर सके
शिला वो अब है ये बनी
माया थी जो इसकी
भस्म ऐसे हो गई
इस भस्म से जो अब रती
सौ रौद्र रूप जो भड़का है
इस इंसान को अब तूने
इंसान कहां छोड़ा है

-कृति अग्रवाल
एमबीबीएस

(हिन्दी पखवाड़ा -2023 के अंतर्गत स्वरचित काव्य-पाठ प्रतियोगिता के छात्र वर्ग में प्रथम पुरस्कार प्राप्त कविता)

समय है निकल जाएगा

सुबह हो या शाम मुझे पता है तू है परेशान
पर विश्वास रख ए इंसान, ये भी एक समय है निकल जाएगा
मुझे ये नहीं मिला, मुझे वो नहीं मिला, तू इन चीजों के लिए है रोता,
पर क्या हर वक्त हर किसी के पास सबकुछ है होता
नहीं न
तुम कोसते हो समय को कि यार मेरा समय अच्छा नहीं चल रहा
पर क्यों भूल जाते हो जितने भी तुम काबिल हो
ये इसी समय ने ही तो बनाया
अरे आने वाली मुश्किलों से जब लड़ोगे तुम,
तब याद करोगे कि आखिर मुझे लड़ने लायक उस खराब समय ने ही तो बनाया है
भले ही आज तेरे पास खाक भी नहीं पर तू शुरुआत कर
अरे एक वक्त आएगा जब गगन भी चूमेगा तू
पर याद रख ना खुशी में तू होना ज्यादा खुश
ना गम में करना ज्यादा गम, क्योंकि वो भी एक समय है निकल जाएगा
हाथों की लकीरों में ज्यादा विश्वास न रखना
समय खुद-ब-खुद अच्छा हो जाएगा, इस बात का भी तू विश्वास न रखना
तू ही मेरी जिंदगी बदलेगा मेरे दोस्त अपने अलावा किसी और पर विश्वास न रखना
और अंत इतना ही कि वक्त हर किसी को मिला है, जिंदगी बदलने के लिए
लेकिन मेरे दोस्त ये जिंदगी दोबारा फिर न मिलेगी वक्त बदलने के लिए
क्योंकि समय है निकल जाएगा

- धुर्व निरापुरे
एमबीबीएस -2020

(हिन्दी पखवाड़ा -2023 के अंतर्गत स्वरचित काव्य-पाठ प्रतियोगिता के छात्र वर्ग में द्वितीय पुरस्कार प्राप्त कविता)

धर्मयुद्ध

कुरुक्षेत्र में चले युद्ध की गाथा मैं सुनाता हूँ

महत्वपूर्ण यह कथा युद्ध की व्यथा मैं आज सुनाता हूँ

हुआ परस्पर युद्ध भाइयों में

निष्ठा में अभिमान में

रोक सके न वासुदेव भी

जो लिखा विधि के विधान में

आरंभ हुआ उस महायुद्ध का राज-बाज और नाद से

देख प्रतिद्वंद्वी स्वयं कुटुंब को धनु छूटे पार्थ हाथ से

मोह के जंजाल से खुद को अलग न कर सके

काटने उस जाल को बने सारथी श्रीनाथ थे |

है प्रेम क्या और मोह क्या जो भेद है बतला दिया |

थाम कर समय का चक्र गीता स्वरुप सुना दिया

भर दिया अदम्य साहस मन में मोह तमस मिटा दिया

सूख चुके रगों का खून अंगार सा खौला दिया |

भीष्म का वेग

कराह सुनकर दुर्योधन की कुरुश्रेष्ठ तब बोले

मिल जाता आशीष तुझे गर पादग्रहण मन बोले

महत्त्वाकांक्षा का अंध छांटकर लोचन अपने खोलो

है धर्म ज्ञान पर खड़े हैं तुम संग अधर्मी कौन अब बोले

वासुदेव से प्रार्थना

देख विनाश कुरुश्रेष्ठ का पांडव तब घबराए
नतमस्तक होकर पांचों पांडव कृष्ण शरण तब आए
विकट संकट आन पड़ी प्रभु मार्ग हमें दिखलाओ
कैसे साधें विजय पथ को युक्ति कुछ बतलाओ
ना साहस हममें इतना कि गांगेय को हम रोकें
इच्छा मृत्यु का ढ़ाल लिए प्रभु कैसे उसको भेदें
शस्त्र कोई टिकता नहीं प्रभु देवव्रत के आगे
कोई मार्ग प्रशस्त करो प्रभु कैसे लक्ष्य को साधें
सुनी समस्या वासुदेव, फिर मुस्कुराकर बोले
जाओ देवव्रत भीष्म शरण में द्वार अगर वो खोले
महान योद्धा वो भरतवंश के मार्ग तुम्हें दिखलाएं
छुपा कोई एक राज अतीत में स्वयं तुम्हें बतलाएं

भीष्म की प्रतिक्रिया

देख प्रसन्न हुए देवव्रत पांडुपुत्र शरण में
अंधरों से संकोच धुनि सुनी पड़े भीष्म चिंतन में
महान योद्धा मैं, वीरपुरुष मैं, क्षत्रिय भी मैं उत्तम हूँ
लड़ सकता यमराज से पर नारी से मैं दुर्बल हूँ।

-केशव कुमार साहू
बी.एससी.एम.एल.टी. 2020

(हिन्दी पखवाड़ा -2023 के अंतर्गत स्वरचित काव्य-पाठ प्रतियोगिता के छात्र वर्ग में तृतीय पुरस्कार प्राप्त कविता)

ना नहीं बोल पाया

बेगानों की बात, तो क्या करूं,

मेरे अपनों ने इस तरह उलझाया |

करते रहे वो हमारा इस्तेमाल

और मैं ठहरा नादान, सभी को साथ

लेकर चलने वाला इंसान ..

ना नहीं बोल पाया

कि बेहद क्षमता थी उड़ने की,

आगे बढ़ने की

जीतने की लेकिन

अपनों ने हम साथ हैं कह कर इतनी

सरलता से मुझे, मेरे लक्ष्य से भटकाया

और मैं नासमझ ना नहीं बोल पाया

सुना था कई तरह के लोग होते हैं।

लेकिन इस ... तरह के लोग होते हैं।

जिंदगी ने ये भी दिखलाया।

और परिवार के संस्कारों ने इस तरह जकड़ा

की सहन करता रहा और ना नहीं बोल पाया।

कभी हास्य का पात्र बनाया तो कभी ऊँचा
बोलकर नीचा दिखलाया कभी पढ़ने से
रोका तो कभी बढ़ने से रोका
बुरी आदतों को इस तरह सींचा
की कर नशे में धुत अपनों को
बहुत मजे लूटा |
दूर ना हो जाऊं लोगों से तो, उन आदतों
को ना चाह कर अपनाया और आखिरकार
ना नहीं बोल पाया।
समझ से बाहर था नहीं जुटा पा
रहा था हिम्मत की साथ रह कर भी
ना था अपनापन वजह यह भी की
जान गए थे लोगों के रंग
दुख इस बात का है कि हमने अपनों को
समझा नहीं पाया और सुख इस बात का कि
हमने अपनों का कभी दिल नहीं दुखाया।

- शक्तिमान डहेरिया
एमबीबीएस-2019

(हिन्दी पखवाड़ा -2023 के अंतर्गत स्वरचित काव्य-पाठ प्रतियोगिता के छात्र वर्ग में सांत्वना पुरस्कार प्राप्त कविता)

अस्पताल का दृश्य

अलार्म की जगह टी-टी-टी की आवाज से जहाँ सुबह होती है

और रात भी उसी टी-टी-टी के साथ होती है

जी हाँ जनाब वो घर नहीं अस्पताल होता है |

जहाँ आपकी नींद मम्मी कि डांट की जगह

नर्स की ब्लड सैंपल और मेडिकेशन चार्ट से खुलती है

उसके बाद

घर में बनी वो मम्मी की गोल-गोल रोटी की जगह

नर्स के हांथों से वो गोल-गोल गोलियां खाने को मिलती हैं |

जी हाँ जनाब वो घर नहीं अस्पताल होते है |

जहाँ अपनों से मिलकर ख़ुशी के बजाए गम के आंसू निकलते हैं

न याद आने वाले भगवान हर एक क्षण याद आते हैं

जहाँ हर जगह से केवल रोगी दर्द में कराहते हैं

जी हाँ जनाब वो अस्पताल कहलाता है |

सुबह में वो डॉक्टर्स राउंड होने की आशा

और फिर डिस्चार्ज न मिलने की निराशा

रोगी को अन्दर ही अन्दर झकझोर देती है

जी हाँ जनाब वो अस्पताल होता है |

दोपहर में चंद्रयान और जी- 20 की न्यूज़ की बजाय

दवाइयां और हॉस्पिटल की ड्यूज बिल की बातें होती हैं

जी हाँ जनाब वो अस्पताल होता है |

शाम को वो खुली हवाओं के बजाय
बंद कमरे के ठंडापन का एहसास दिलाती है
और फिर पकौड़े और चाय की जगह
कड़वी सूप और दवाई की खाद होती है
जी हाँ जनाब वो अस्पताल कहलाता है |
रात में मम्मी के हाथ के बने खाने की याद आती है
क्योंकि अस्पताल वाला खाना बहुत बेस्वाद होता है
बार बार नर्स और डॉक्टर का आना ही
नींद न आने का कारण बन जाता है
जी हाँ जनाब वो अस्पताल होता है |
जहाँ दवा और दुआ दोनों काम कर जाते हैं
लेकिन अपनों का दर्द देखकर सहनशक्ति नाकाम हो जाती है
जहाँ डॉक्टर्स और नर्स कभी भगवान तो कभी यमराज लगते हैं
जी हाँ जनाब वो अस्पताल होता है |
सुबह से लेकर शाम तक बस एक झलक पाने की आस होती है
लेकिन फिर गार्ड कि डांट सुनकर मन निराश होता है
तब उस कीमती रिश्ते कि अहमियत का एहसास होता है
जी हाँ जनाब वो अस्पताल होता है |
लेकिन अंत में उसी अस्पताल में
जहाँ डॉक्टर्स और नर्सेस का राउंड होता है
जिसके जरिए रोगी का जीवन साउंड होता है
कराहने वाले रोगी मुस्कुराने लगते हैं
ठीक होने के बाद बच्चे उछलने लगते हैं
तब वो ही अस्पताल मंदिर से लगने लगते हैं
जी हाँ जनाब वो अस्पताल होता है |

-प्रज्ञा पारुल
बीएससी नर्सिंग

(हिन्दी पखवाड़ा -2023 के अंतर्गत स्वरचित काव्य-पाठ प्रतियोगिता के छात्र वर्ग में सांत्वना पुरस्कार प्राप्त कविता)

दवाई, दोस्त या दुश्मन

आओ लोगों तुम्हें बताएं, दवाई की यह कहानी है |

गुण दोष इसका समझे, तभी जिंदगानी है ||

शरीर की रखवाली करती दवाई ये महान है|

कष्टों को दूर भगाना, यही इसका काम है||

मलेरिया, फाइलेरिया और बीमारी भी अनेक हैं|

दवाई हमारी दोस्त है, काम इसका नेक है ||

अपने से मत लेना इसे, डॉक्टरों का यह काम है |

खाने पर अगर दिक्कत हो, तो तुरंत बताना काम है |

नई दिक्कत हो तो नर्स आशा को बताना जरूरी है |

कब दोस्त दुश्मन बन जाए, यह जानना जरूरी है ||

दवाई ने हमें जीवन दिया, पर चौकस रहना काम है |

मजाक में हम न ले इसे, यही अच्छा काम है ||

मिलजुल कर सब काम करें, तभी जिंदगी खुशहाल है |

डॉक्टर नर्स को नहीं बताए तो यह जिंदगी बदहाल है ||

-स्वर्णिम आदित्य

एम.बी.बी.एस. -2020

चुप्पी साधे चहार दीवारी

उन सुदूर सुंदर अद्भुत गॉवों में

रंग बदलते, रंग बिरंगे शहरों में

ऊंची –ऊंची दीवारों और तंग गलियारों में

एक पत्थर सी औरत .....

कभी मिले वो तुम्हें – कभी मिले वो तुम्हें

एक लंबी स्याह – काली रात के बाद

तो देखना तुम.....

खामोश रहती सबकुछ सहती कुछ ना कहती

घर की चीख घर में ही रहती

वो काली रात किसी से कुछ ना कहती

मिलोगे जो कभी उस चंगेज से उजड़े शहरों सी

अधूरे जहान सी बेदर्द नामुमकिन ख्वाब सी

खामोश श्मशान सी मीरा और शंकर से बड़े विषपान सी

देख सको तो देख ही लेना ....देख सको तो देख ही लेना

वो तन के घाव, वो मन के घाव, जो देख ना पाओ

नैनों से, वो अंतःकरण के घाव से

चेहरे पर अंधेरे होंगे ...चेहरे पर अंधेरे होंगे, नीले धब्बे चेहरे और गर्दन को घेरे होगे

कुछ स्पष्ट बदन पर उकेरे होंगे

कुछ छुपे होंगे कुछ दिखते होंगे .....कुछ छुपे होंगे कुछ दिखते होंगे

वो घाव कभी तो बड़ी जोर से चीखते होंगे

जुल्म सहे गुमसुम रहे, सहती रहे ऑसुओं को सदा

वो बहाती रहे , प्यार का सितम कब तक सहे....प्यार का सितम कब तक सहे

जुल्मी वो प्रेम के नकाब में छुपा है

देख ना पाओ उसे वो खोखले समाज की आड़ में छुपा है

कभी मिले तुम्हें दुर्गा, लक्ष्मी और सावित्री सी सुरीली औरत

तो बता आना कि.....

खामोश अब ना रहना तुम्हें, घनघोर अंधेरा ना

सहना तुम्हें सबकुछ साफ है कहना तुम्हें

अब आजाद खुशियों से दूर ना रहना तुम्हें

-अभिनाश मरहाड़ा

एमबीबीएस -2019

अभिमान हिंदुस्तान

ये देश मेरा, ये संस्कृति, ये अभिमान मेरा है |

सरहदों पर शहीद हो जाते वीर, वो हिंदुस्तान मेरा है |

जहां धर्म- जातियां हैं अनेक जिसका हम यशगान करें

प्राचीन है वेदों की भाषा क्यों ना संस्कृति का सम्मान करें

आलोकित हुआ देश जब से भारत ने चांद पर कदम रखा|

वैज्ञानिकों के अंतरिक्ष यान की खोज साकार होते दुनिया ने देखा

ये देश मेरा ये संस्कृति ये अभिमान मेरा है |

सरहदों पर शहीद हो जाते वीर, वो हिंदुस्तान मेरा है |

ऋषि मुनियों की परंपरा से सनातन धर्म की पहचान है

प्रकृति के दिए उपहार में बहुमूल्य पदार्थों का खान है

अविरल है यहां की नदियां जैसे मां गंगा का प्रमाण है

और जहां बात हो वासुदैव कुटुंबकम की वो देश हिंदुस्तान है

ये देश मेरा ये संस्कृति ये अभिमान मेरा है |

सरहदों पर शहीद हो जाते वीर, वो हिंदुस्तान मेरा है |

हरियाली जिसकी धरती जहां प्राणी वन्यजीव गतिमान है

सूरज की लालिमा से प्रकृति अंधकार से प्रकाशवान है

हिमालय ओढ़े बर्फ की चादर जिससे उज्ज्वलता की शान है

लहर- लहर लहराए तीन रंग का तिरंगा प्यारा वो हिंदुस्तान है

ये देश मेरा, ये संस्कृति, ये अभिमान मेरा है |

सरहदों पर शहीद हो जाते वीर, वो हिंदुस्तान मेरा है |

- खेमराज साहु

सुरक्षा विभाग

जीने से बढ़कर कुछ नहीं

तेरी इस बेरूख दुनिया का अंदाज हमें ना भाया

हम जी कर देख चुके काफिर

कुछ खास मजा ना आया

शौक अब हैं मर चुके

सब फूल पत्ते झड़ चुके

हम से ना मांग ख्वाब तू

हम नींद गिरवी धर चुके

मन में है गीत राग सा

बुझ गया जो आग था

है राख में क्या ढूंढता

मिलेगा ना कुछ भी यहां

वक्त ना मेरा तू जाया कर

दर पे मेरे ना आया कर

लबों से कह दे अपने तू

ना गीत मेरे गाया कर

तन्हा ही तू रहने दे

बेफिक्र यूं ही बहने दे

मुझसे न छीन मुझको तू

मुझमें ही मुझको रहने दे

मेरी पहचान न पूछ मुझसे तू

रोज गिरते हैं जो ख्वाब टूटकर
उन्हे फिर से सजा लेती हूं
गिरने नहीं देती पलकों से बाहर
रूह को रोज भिगो लेती हूं
बह जाने को जी करता है
मैं खुद को डुबो देती हूं
दुख है तो सुख भी है
निराशा है तो आशा भी है
जो आज नहीं तो कल सही
जो आज है वो कल नहीं
हम चाहते हैं
हमें छोड़ो ना हमें रोको ना
वीरभय होकर बहने दो
बरबाद हैं बरबाद ही सही
बरबाद ही रहने दो
चुप्पी ना थोपो मुझपे तुम
है हालात वो कहने दो
बरबाद हैं बरबाद ही सही
बरबाद ही रहने दो|

- रानी द्विवेदी
बीएएसएलपी

जिंदगी का सफर

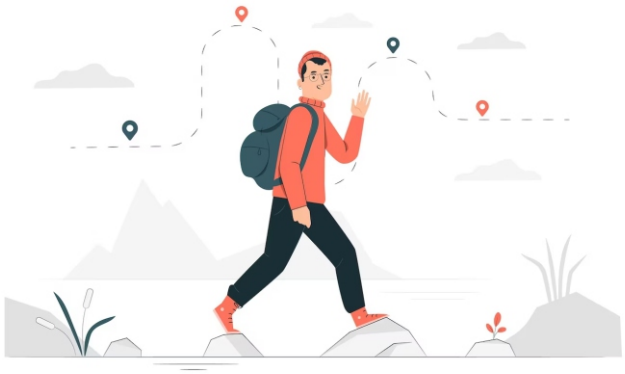

हर किसी के साथ
कहां जिंदगी का सफर होता है
किसी हमसफर का भी
अपना घर होता है
मिलाप हुआ था कभी किसी से
वार्तालाप हुई थी जिससे
उसका साथ बिखरने नहीं देगा मुझे
पर अच्छा नहीं था संयोग
क्योंकि किया था उसने वियोग
थी मन में उसकी चेतना
दिलाती थी जो विरह वेदना
फिर मेरे अन्दर से आवाज आई
कि रो मत मेरे भाई
क्योंकि हर किसी के साथ कहां नसीब होता है
किसी हमसफर का भी
अपना घर होता है

- गौरव शर्मा
एमबीबीएस -2018

विश्वास

विश्वास कर किसी पे, किन्तु ये जान ले
इसके टूटने का भय है |
विश्वास कर किन्तु ये जान ले
किसी के छूटने का भय है |
विश्वास कर क्योंकि
यही जीवन का आधार है |
इसके बिना अपनों से जुड़ना,
निराधार है |
विश्वास पाने वाला यदि विश्वसनीय हुआ
तो ये जीवन का सर्वोत्तम उपहार है|
मिला किन्तु विश्वासघात
तो ये एक प्रतिकार है |
दूसरों के प्रतिकार से,
अपना विश्वास ना खोना तुम |
झांक अपने अंतर्मन में
राह नई ढूंढ लेना तुम |
छोड़ के अपनी सारी आशाएं
तुम कहीं नहीं जा पाओगे|
जब टूटोगे, उबरोगे, निखरोगे,
तब अपना एक नया संस्करण पाओगे |

-अनुराग अग्रवाल
कनिष्ठ प्रशासनिक सहायक
निदेशक कार्यालय

पूछ रहा तिरंगा कब तक

पूछे तिरंगा अब कब तक फिजा ऐ खामोशी यूँ ही रहेगी

आतंक चाहे हो अनंतनाग, पुलवामा या बस्तर

शहीद हुई हर आत्मा पूछ रही यही सवाल

कब तक फिजां ऐ खामोशी यूँ ही रहेगी

कितनी माँओं को अपनी कोख उजड़ते देखना होगा

सुहागनियों को अपने सुहाग की चूड़ियाँ तोड़नी होगी

बहनों को अपने भाई की कलाई पे

दोबारा राखी न बांध पाने का दुःख सहना होगा

पूछे तिरंगा कब तक फिजां ऐ खामोशी यूँ ही रहेगी

यूँ तो हवाओं के रूख पे राजनेता अपनी

संवेदनाओं के दो शब्दों की रोटी सेक जाते हैं

पर उस मासूम का क्या जिसका बचपन

अपने पापा के साये से वंचित हो जाता है

पूछे तिरंगा कब तक फिजां ऐ खामोशी यूँ ही रहेगी

उन वीरों का बलिदान अखबारों की सुर्ख़ियों में

तब कहीं खो जाता है जब नेता, अभिनेता

का पोस्टर पहले जगह पाता है

पूछे तिरंगा कब तक फिजां ऐ खामोशी यूँ ही रहेगी

अब तो तिरंगा भी नतमस्तक है
जो पूछ रहा भारत से
क्यों मैं लहराने से ज्यादा मैं कफ़न को समेटने में लगा हूँ
पूछे तिरंगा कब तक फिजां ऐ खामोशी यूँ ही रहेगी
हर शहीद के आँगन की तुलसी भी अब मुरझाने लगी है
माँ बाप, भाई -बहन और सुहागनियों के वेदना भी चीख-चीख
कर थकने लगी है
पूछे तिरंगा कब तक फिजां ऐ खामोशी यूँ ही रहेगी
जब पता उसे भी है , मुझे भी
कौन पाल रहा, कौन रहा है , इस आतंकी सांप को
फैला रहा धर्म जात की नफरत को
तो क्यों ये मज़बूरी है
पूछे तिरंगा कब तक फिजां ऐ खामोशी यूँ ही रहेगी
क्यों नहीं मिटाते इसे
हमेशा के लिए इक बार
आस्तीन ए सांप चाहे एक हो या हजार
पूछे तिरंगा कब तक फिजां ऐ खामोशी यूँ ही रहेगी
ऐ भारत चल उठ, खड़ा हो कर दे ऐलान
न रुकेगा तू , न थमेगा तू
न थकेगा तू , न झुकेगा तू
जब तक कर न दे इस आतंक का सफाया तू
चाहे हो इस पार या उस पार

- डॉ. संजय नेगी
अतिरिक्त प्राध्यापक
माइक्रोबायोलॉजी विभाग

स्त्री

आज मैं अपनी ख़ुशी तलाशुंगी,
पहचानूंगी और उसे बनाये रखूंगी
भले ही मैं एक स्त्री हूँ|
मैं मेहनत करुँगी और
अपने सपनों को साकार करुँगी |
भले ही मैं एक स्त्री हूँ|
मैं अपने निर्णय खुद लूंगी
और खुद दृढ़ रहूंगी
अपने लिए सुन्दरता के
मायने मैं खुद तय करुँगी |
भले ही मैं एक स्त्री हूँ|
मैं नाचूंगी, गाउंगी, इठलाउंगी ,
अपने हक़ के लिए लडूंगी
मेरे दिल की हर मुराद मैं पूरी करुँगी |
भले ही मैं एक स्त्री हूँ|

मैं सम्मान करुँगी, पाउंगी ,

खुद को व्यक्त करुँगी और करती रहूंगी |

साथ दूंगी, निभाउंगी समाजोन्मुख रहूंगी |

भले ही मैं एक स्त्री हूँ |

मैं अपनी सीमाएं खुद तय करुँगी

और बनाये रखूंगी

मैं स्वयं घर और समाज में

अच्छे परिवर्तन लाने के लिए तत्पर रहूंगी |

भले ही मैं एक स्त्री हूँ |

दयालु, संवेदनशील,

प्यारी तो मैं थी ही |

आज मैं धैर्यवान,

निर्णायक, प्रेरित हूँ |

हाँ मैं एक स्त्री हूँ |

सबला हूँ |

- डॉ. ऋजुता
पीजी जे आर
माइक्रोबायोलॉजी विभाग

धार्मिक सियासत

जनता को कभी ईसा कभी अल्लाह
तो कभी राम में बांटते हैं
कभी गिरजा, कभी मंदिर, कभी अजान में बांटते है
ये कुर्सी के भूखे लोग
इंसान को इंसान में बांटते हैं
इंसान को इंसान में लड़ाते हैं
ऑखें मूंदे चले जा रहा देश जिनके पीछे
इरादे इनके बड़े खराब होते हैं
मुल्क में फैला रखा है घूस के उद्योग को
कल के कुछ गुण्डे अब के विधायक होते हैं
नजरों में बसती है इनके बस सत्ता
कुर्सी के लिए इन्होंने खेले खूनी दांव होते हैं
कुर्बान होते हैं जब आर-पार के फौजी
पूरे इनके राजनैतिक ख्वाब होते हैं
पड़े जरूरत तो बहा लेते हैं मगरमच्छी आंसु
ये अभिनेता बड़े लाजवाब होते हैं
आँखों पर सबकी ये पर्दा डाल देते हैं
अपने पाप छुपा रहे होते हैं
दूसरों की गलतियों को
चीख-चीख कर बता रहे होते हैं

रातभर ये देश बेचकर, सुबह खादी पहन

कल्चर के ठेकेदार होते हैं

गिरगिट की तरह रंग बदलने के आदि

नजर आते हैं, जब चुनाव आते हैं

गरीबों के आगे वोट के लिए हाथ जोड़ते हैं

लेकिन दिल के बड़े मक्कार होते हैं

अपना रूतबा बढ़ाने के लिए

नौजवानों में भर रहे ये जहर होते हैं

इंसान को इंसान का दुश्मन बना

सत्ता अपनी कर रहे मजबूत होते हैं

- उज्ज्वल शर्मा

एमबीबीएस - 2019

राजभाषा प्रकोष्ठ 'स्पंदन' पत्रिका में प्रकाशन के लिए मौलिक रचनाएं आमंत्रित करता है। एम्स, रायपुर के अधिकारी, संकाय सदस्य और कर्मचारी स्वरचित रचनाएं rajbhashaprakoshth@aiimsraipur.edu.in पर ई-मेल के माध्यम से प्रेषित कर सकते हैं।

निबंध प्रतियोगिता

छात्र-छात्राएं

क्र.	नाम	पद	रैंक
1	गौरव शर्मा	एम. बी.बी.एस.	1
2	प्रियंका जांगिड़	बी.एससी. (नर्सिंग)	2
3	प्रतिभा पुनिया	बी.एससी. (नर्सिंग)	3
4	अंजली ठाकुर	बी.एससी. (नर्सिंग)	3
5	नम्रता प्रजापति	बी.एससी. (नर्सिंग)	4
6	मनीषा चोयल	बी.एससी. (नर्सिंग)	4
7	प्रियंका खिलेरी	बी.एससी. (नर्सिंग)	4
8	सुमन कुमारी	बी.एससी. (नर्सिंग)	4

अधिकारी/कर्मचारी/ संकाय सदस्य

क्र.	नाम	पद	रैंक
1	डॉ. अनुदिता भार्गव	प्राध्यापक	1
2	रश्मि शर्मा	पुस्तकालयाध्यक्ष	2
3	नीलम रवि कुमार	वरिष्ठ नर्सिंग अधिकारी	2
4	डॉ. शिवशंकर मिश्रा	वरिष्ठ रेजिडेंट	3
5	मेघा यादव	नर्सिंग अधिकारी	3
6	संदीप कुमार साहु	निज सहायक	4
7	अनुराग अग्रवाल	कनिष्ठ प्रशासनिक सहायक	4
8	पुष्पलता भल्ला	पुस्तकालयाध्यक्ष	4
9	गोपाल शर्मा	कनिष्ठ प्रशासनिक सहायक	4

काव्य पाठ प्रतियोगिता

छात्र-छात्राएं

क्र.	नाम	पद	रैंक
1	कीर्ति अग्रवाल	एम. बी.बी.एस.	1
2	ध्रुव निरापुरे	एम. बी.बी.एस.	2
3	केशव कुमार	बी.एससी. एम.एल टी.	3
4	शक्तिमान डहेरिया	एम. बी.बी.एस.	4
5	प्रज्ञा पारुल	बी.एससी. (नर्सिंग)	5

अधिकारी/कर्मचारी/ संकाय सदस्य

क्र.	नाम	पद	रैंक
1	गोपाल शर्मा	कनिष्ठ प्रशासनिक सहायक	1
2	डॉ. राकेश गुप्ता	सहायक प्राध्यापक	2
3	डॉ. शिवशंकर मिश्रा	वरिष्ठ रेजिडेंट	2
4	शिखा श्रीवास्तव	कनिष्ठ प्रशासनिक सहायक	3
5	प्रो. अलोक अग्रवाल	अधिष्ठाता (अकादमिक)	4
6	डॉ. सीमा साहु	सहायक प्राध्यापक	5
7	डॉ. अरुणिमा जगजापे	सहायक प्राध्यापक	5

आशु भाषण प्रतियोगिता

छात्र-छात्राएं

क्र.	नाम	पद	रैंक
1	केशव कुमार	बी.एससी. एम.एल टी.	1
2	प्रियंका जांगिड़	बी.एससी. (नर्सिंग)	2
3	श्रीपाल चौधरी	एम.पी.एच.	3
4	रानी द्विवेदी	बीएएसएलपी	4
5	गौरव शर्मा	एम. बी.बी.एस.	5

अधिकारी/कर्मचारी/संकाय सदस्य

क्र.	नाम	पद	रैंक
1	डॉ. संजय नेगी	अतिरिक्त- प्राध्यापक	1
2	डॉ. राकेश गुप्ता	सहायक प्राध्यापक	2
3	गोपाल शर्मा	कनिष्ठ प्रशासनिक सहायक	3
4	डॉ. शिवशंकर मिश्रा	वरिष्ठ रेजिडेंट	4
5	पुष्पलता भल्ला	पुस्तकालयाध्यक्ष	5

चिकित्सा शब्दावली

छात्र-छात्राएं

क्र.	नाम	पद	रैंक
1	देवेन्द्र बोयल	एम. बी.बी.एस.	1
2	गौरव शर्मा	एम. बी.बी.एस.	2
3	डॉ. निलेश श्रीवास्तव	एम.पी.एच.	2
4	अरविन्द कुमार भारती	एम.पी.एच.	3
5	नीतू कुमारी अरोरा	बी.एससी. (नर्सिंग)	4
6	आकाश मिश्रा	बी.एससी. एम.एल टी.	5

संकाय सदस्य

क्र.	नाम	पद	रैंक
1	भरत कुमार चास्ता	नर्सिंग अधिकारी	1
2	डॉ. अटल सिंह परिहार	सहायक प्राध्यापक	2
3	डॉ. सुनील कुमार राय	सहायक प्राध्यापक	3
4	मेघा यादव	नर्सिंग अधिकारी	4
5	डॉ. राकेश गुप्ता	सहायक प्राध्यापक	4
6	शालिनी सोरेन	डायटीशियन	4
7	डॉ. शिवशंकर मिश्रा	वरिष्ठ रेजिडेंट	5
8	गिरीश प्रजापति	नर्सिंग अधिकारी	5

प्रशासनिक शब्दावली

अधिकारी/कर्मचारी

क्र.	नाम	पद	रैंक
1	अमित कुमार बंजारे	कनिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी	1
2	संदीप कुमार साहु	निज सहायक	2
3	गोपाल शर्मा	कनिष्ठ प्रशासनिक सहायक	3
4	प्रमोद कुमार साहु	कनिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी	4
5	चैतन्य कांगो	कनिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी	5

श्रुति लेख प्रतियोगिता

छात्र-छात्राएं

क्र.	नाम	पद	रैंक
1	अंजली ठाकुर	बी.एससी. (नर्सिंग)	1
2	जीतेन्द्र सिंह बागरी	एम. बी.बी.एस.	2
3	गौरव शर्मा	एम. बी.बी.एस.	3
4	मोनिका कुमारी	बी.एससी. (नर्सिंग)	3
5	प्रियंका जांगिड़	बी.एससी. (नर्सिंग)	4
6	डॉ. स्वरुपा माधुरी रथ	पी. जी. जूनियर रेजिडेंट	4
7	केशव कुमार साहु	बी.एससी. एम.एल टी.	5
8	नम्रता प्रजापति	बी.एससी. (नर्सिंग)	5

अधिकारी/कर्मचारी/ संकाय सदस्य

क्र.	नाम	पद	रैंक
1	लक्ष्मी	लैब परिचारक	1
2	संदीप कुमार साहु	निज सहायक	2
3	गोपाल शर्मा	कनिष्ठ प्रशासनिक सहायक	3
4	आशीष श्रीवास्तव	कनिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी	4
5	सुरेन्द्र वर्मा	कनिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी	4
6	डॉ. शिवशंकर मिश्रा	वरिष्ठ रेजिडेंट	5

वाद-विवाद प्रतियोगिता

छात्र-छात्राएं

क्र.	नाम	पद	रैंक
1	अंजली ठाकुर	बी.एससी. (नर्सिंग)	1
2	अन्नामेरी रॉय	बी.एससी. (नर्सिंग)	1
3	प्रज्ञा पारुल	बी.एससी. (नर्सिंग)	2
4	श्रीपाल चौधरी	एम.पी.एच.	3
5	केशव कुमार साहु	बी.एससी. एम.एल टी.	4
6	गौरव शर्मा	एम. बी.बी.एस.	5

अधिकारी/कर्मचारी/संकाय सदस्य

क्र.	नाम	पद	रैंक
1	मेघा यादव	नर्सिंग अधिकारी	1
2	डॉ. राकेश गुप्ता	सहायक प्राध्यापक	2
3	गोपाल शर्मा	कनिष्ठ प्रशासनिक सहायक	3
4	रश्मि शर्मा	पुस्तकालयाध्यक्ष	4
5	पुष्पलता भल्ला	पुस्तकालयाध्यक्ष	5

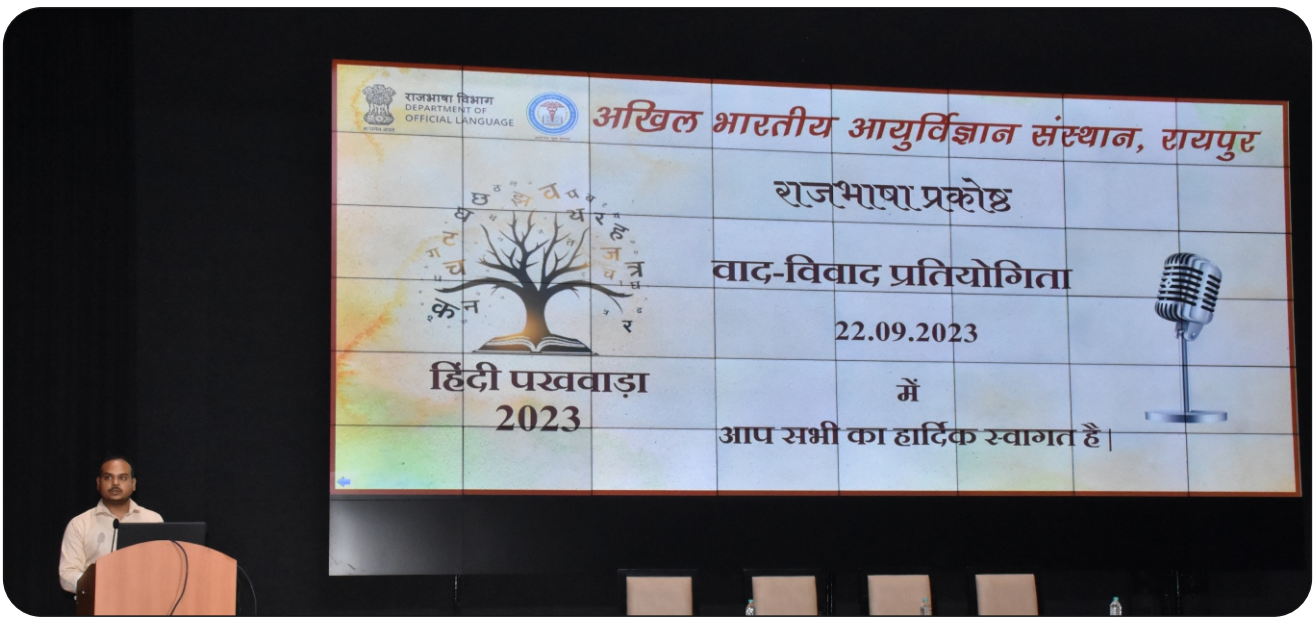

प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता

अधिकारी/कर्मचारी/ संकाय सदस्य

छात्र-छात्राएं

टीम - बी - प्रथम

नेतृत्व - डॉ. सिदार्थ नंदा

क्र.	नाम	पद
1	डॉ. अनुदिता भार्गव	प्राध्यापक
2	डॉ. सिदार्थ नंदा	सहायक प्राध्यापक
3	डॉ. संजय सिंह नेगी	सहायक प्राध्यापक
4	डॉ. शिवशंकर मिश्रा	वरिष्ठ रेजिडेंट
5	डॉ. स्वरुपा माधुरी रथ	पी. जी. जूनियर रेजिडेंट
6	डॉ. सिमरन	पी. जी. जूनियर रेजिडेंट
7	रश्मि शर्मा	पुस्तकालयाध्क्ष
8	पुष्पलता भल्ला	पुस्तकालयाध्क्ष

टीम - एफ - द्वितीय

नेतृत्व - संदीप साहु

क्र.	नाम	पद
1	आशीष श्रीवास्तव	कनिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी
2	संदीप कुमार साहु	निज सहायक
3	राजेश सैनी	कनिष्ठ प्रशासनिक सहायक
4	अक्षय अस्पताल	परिचारक
5	गोपाल शर्मा	कनिष्ठ प्रशासनिक सहायक
6	अनुराग अग्रवाल	कनिष्ठ प्रशासनिक सहायक
7	स्वेता सैमुएल	कनिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी
8	मनीष कुमार	अस्पताल परिचारक

टीम - सी - तृतीय

नेतृत्व - राजेश यादव

क्र.	नाम	पद
1	राजेश यादव	स्टोर कीपर क्लर्क
2	डॉ. नितिन अग्रवाल	संकाय सदस्य
3	विमलेश कुमार सिंह	स्टोरकीपर क्लर्क
4	स्वाधीन महापात्रा	डी. ई. ओ.
5	मनीष कुमार	कनिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी
6	हरीश कुमार साहु	स्टोर कीपर क्लर्क
7	नीलिमा राहुंगडुले	कनिष्ठ प्रशासनिक सहायक

टीम - जी - सांत्वना -1
नेतृत्व - डॉ. विक्रम पई

क्र.	नाम	पद
1	डॉ. के. लक्ष्मी	जे. आर. एफ., होम्योपैथी
2	डॉ. आशुतोष त्रिपाठी	सहायक प्राध्यापक
3	डॉ. विक्रम पई	सहायक प्राध्यापक
4	पिंकू वर्मा	बी.एससी. (नर्सिंग)
5	शालिनी सोरेन	डायटीशियन
6	नुपुर जैन	डायटीशियन
7	रक्षा कुमावत	बी.एससी. (नर्सिंग)
8	प्रियंका खिलेरी	बी.एससी. (नर्सिंग)

टीम - जे - सांत्वना -2
नेतृत्व - अरविन्द कुमार भारती

क्र.	नाम	पद
1	डॉ. निलेश श्रीवास्तव	एम.पी.एच.
2	डॉ अरविन्द कुमार भारती	एम.पी.एच.
3	सोनाली जयसवाल	एम.पी.एच.
4	प्राची	एम.पी.एच.
5	रिया मन्ना	एम.पी.एच.
6	निशात जाफरी	एम.पी.एच.
7	नीतिकशा सिंह	एम.पी.एच.
8	डॉ. श्रीपाल चौधरी	एम.पी.एच.
9	रोशन	एम.पी.एच.

टंकण प्रतियोगिता

(यूनिकोड/कृतिदेव)

अधिकारी/कर्मचारी

क्र.	नाम	पद	रैंक
1	अंजनी कुमार पटेल	कनिष्ठ प्रशासनिक सहायक	1
2	आशीष श्रीवास्तव	कनिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी	2
3	विजय यादव	क्लर्क	3
4	संदीप कुमार साहु	निज सहायक	4
5	डोमन लाल	डी. ई. ओ.	5
6	रोशनी संदीप	क्लर्क	5

हिंदी पखवाड़ा-2023

राजभाषा प्रकोष्ठ, एम्स, रायपुर के तत्वावधान में दिनांक 16-29 सितंबर तक हिंदी पखवाड़ा-2023 मनाया गया। यह आयोजन निश्चित रूप से राजभाषा हिंदी के कार्यालयीन कार्यों में बढ़ते प्रयोग की संवाहक है। संस्थान के सभी अधिकारियों, कर्मचारियों एवं छात्र-छात्राओं को हिंदी पखवाड़ा का पूरे वर्ष इंतजार रहता है। हिंदी पखवाड़ा में आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के माध्यम से उन्हें एक मंच प्रदान किया जाता है जिससे वे अपने अंदर की छुपी प्रतिभाओं एवं हिंदी से अपने अगाध प्रेम की अभिव्यक्ति करने में सक्षम हो पाते हैं। हिंदी पखवाड़ा में आयोजित किए जाने वाली विभिन्न प्रतियोगिताओं में उत्कृष्ट प्रर्दशन करने हेतु प्रतिभागियों में एक अनूठी प्रतिस्पर्धा दिखती है जो कि प्रत्यक्ष और परोक्ष रूप से राजभाषा हिंदी के संवर्धन एवं समृद्धि में सहायक होती है। इस आयोजन से निश्चित रूप से संस्थान के अधिकारी, कर्मचारी एवं छात्र-छात्राएं अपने-अपने स्तर पर हिंदी में अधिक से अधिक कार्य करने हेतु प्रोत्साहित होते हैं। प्रत्येक वर्ष की भांति इस वर्ष भी राजभाषा प्रकोष्ठ, एम्स रायपुर द्वारा हिंदी पखवाड़ा-2023 में विभिन्न प्रतियोगिताओं यथा निबंध लेखन, स्वरचित काव्य-पाठ, आशु भाषण, टंकण प्रतियोगिता, श्रुति लेख, चिकित्सा शब्दावली, प्रशासनिक शब्दावली, वाद-विवाद, प्रश्नोत्तरी का सफल आयोजन किया गया।

हिंदी पखवाड़ा-2023 के पुरस्कार वितरण समारोह को और भी अधिक रोचक एवं ज्ञानवर्धक बनाने के लिए 'हिंदी की समृद्धि में नई तकनीक का योगदान' विषय पर एक भव्य कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि के रूप में संस्थान के अधिष्ठाता (शैक्षिक) प्रो. डॉ. आलोक अग्रवाल एवं विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री अंशुमान गुप्ता, उप-निदेशक (प्रशासन) ने उक्त शीर्षक पर महत्त्वपूर्ण एवं व्यापक जानकारियों से युक्त व्याख्यान प्रस्तुत किया। इसी क्रम में संस्थान के वरिष्ठ हिंदी अधिकारी श्री शिव शंकर शर्मा ने भी राजभाषा से संबंधित विभिन्न टूल्स और सॉफ्टवेयर की जानकारी दी जिससे राजभाषा हिंदी की समृद्धि में नई तकनीकों का भरपूर उपयोग किया जा सके। हिंदी पखवाड़ा-2023 के आयोजन में कुल 94 छात्र-छात्राओं एवं 201 अधिकारी/कर्मचारी ने भाग लिया। पुरस्कार वितरण समारोह में विजेता प्रतिभागियों में कुल 2,25,000/- की राशि वितरित की गई।

नई तकनीक बना रही हिंदी को और अधिक समृद्ध

- एम्स में नई तकनीक के माध्यम से हिंदी के प्रचार पर जोर
- हिंदी पखवाड़ा-2023 का समापन, विजेताओं को 2.25 लाख के पुरस्कार

अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान में हिंदी दिवस के अवसर पर आयोजित राजभाषा पखवाड़ा-2023 विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कृत करने के साथ संपन्न हो गया। इस अवसर पर 15 प्रतियोगिताएं आयोजित की गई जिनके विजेताओं को 2.25 लाख रुपये के पुरस्कार प्रदान किए गए। विशेषज्ञों ने हिंदी को और अधिक प्रोत्साहित करने के लिए नई तकनीक के अनुप्रयोग पर जोर दिया।

अधिष्ठाता (शैक्षणिक) प्रो. आलोक चंद्र अग्रवाल ने कहा कि हिंदी बोलने और लिखने में बिल्कुल समान है। अन्य भाषाओं की तरह इसमें भ्रम की स्थिति नहीं होती है। यह जनभाषा है और इसे राष्ट्रीय प्रगति के लिए सभी को अपनाना आवश्यक है। उप-निदेशक (प्रशासन) अंशुमान गुप्ता का कहना था कि हिंदी सरल और सहज है जिसे चिकित्सकों, नर्सिंग स्टॉफ और अन्य कर्मचारियों को ज्यादा से ज्यादा प्रयोग करना चाहिए। उन्होंने स्मार्ट फोन में भी हिंदी के बढ़ते प्रयोग का जिक्र करते हुए कहा कि नई तकनीक ने हिंदी को और अधिक सशक्त बनाया है।

वरिष्ठ हिंदी अधिकारी (प्र.) शिव शंकर शर्मा का कहना था कि हिंदी में भी अब आर्टिफिशियल

इंटेलिजेंस का प्रयोग किया जा रहा है। ऐसे ही लीला, मंत्रा, सारांक्षक और वाचांतर साफ्टवेयर उपलब्ध हैं जिनकी मदद से हिंदी को सहजता के साथ सीखा जा सकता है या अनुवाद किया जा सकता है। इसके साथ ही हिंदी की कहानी सुनाने वाले ऑडिबल साफ्टवेयर भी उपलब्ध हो गए हैं।

इस अवसर पर प्रो. अग्रवाल और श्री गुप्ता ने विजेता प्रतिभागियों को पुरस्कृत किया। हिंदी में सबसे अधिक डिक्टेशन देने के लिए डॉ. मुदालशा रवीना को 25 हजार रुपये का प्रथम और डॉ. लोकेश कुमार सिंह को 20 हजार रुपये का द्वितीय पुरस्कार दिया गया। गैर हिंदी भाषी क्षेत्र के वर्ग में डॉ. सिद्धार्थ नंदा को 25 हजार रुपये का प्रथम पुरस्कार दिया गया। राजभाषा प्रोत्साहन योजना में हिंदी भाषी क्षेत्र के केदार नाथ लास्कर को प्रथम और गैर हिंदी भाषी क्षेत्र के लिए जी. राजा को प्रथम पुरस्कार प्रदान किया गया।

राजभाषा पखवाड़ा में 15 प्रतियोगिताएं आयोजित की गई थी जिनके 125 से अधिक प्रतिभागियों को लगभग 2.25 लाख रुपये के पुरस्कार प्रदान किए गए। इनमें प्रथम पांच हजार रुपये का, द्वितीय चार हजार, तृतीय तीन हजार रुपये के एक-एक पुरस्कार हैं और 1500 रुपये के दो सांत्वना पुरस्कार प्रदान किए गए। विजेताओं में चिकित्सक, अधिकारी, कर्मचारी और छात्र सभी सम्मिलित हैं।

पुरस्कार वितरण समारोह में प्रो. अनुदिता भार्गव, प्रो. रेनू राजगुरु, डॉ. सत्याकी गांगुली, डॉ. देबज्योति मोहंती, डॉ. अमृताव घोष, डॉ. अतुल जिंदल सहित बड़ी संख्या में चिकित्सक और नर्सिंग छात्र भी उपस्थित थे। राजभाषा पखवाड़ा-2023 के विभिन्न कार्यक्रम के आयोजन में मधुरागी श्रीवास्तव, सैयद शादाब और उमेश कुमार पांडेय का योगदान रहा।

संपादकीय समिति

संरक्षक

प्रो.(डॉ.)अजय सिंह

निदेशक एवं अध्यक्ष

विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति

मार्गदर्शक

कर्नल अजित कुमार

उप-निदेशक (प्रशासन)

संपादक

शिव शंकर शर्मा

सहायक संपादक

मधुरागी श्रीवास्तव

सैय्यद शादाब

उमेश कुमार पाण्डेय

पृष्ठ सज्जा

नृत्य गोपाल

इस पत्रिका में प्रकाशित रचनाएं लेखकों के निजी विचार/भावनाएं हैं।

आरोग्यम् सुख सम्पदा

अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, रायपुर

(केन्द्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार के अधीन स्वायत्त संस्थान)

ALL INDIA INSTITUTE OF MEDICAL SCIENCES, RAIPUR

(An Autonomous Institution under the Ministry of Health and Family Welfare, Govt. of India)

https://www.aiimsraipur.edu.in

https://twitter.com/aiimsraipur

https://www.facebook.com/
All-India-Institute-of-Medical-SciencesAIIMS-Raipur

rajbhashaprakoshth@aiimsraipur.edu.in

राजभाषा प्रकोष्ठ, अ.भा.आ.सं.,
रायपुर द्वारा प्रकाशित और प्रसारित